श्रीहित रूपवाणी माला का सप्तम पुष्प

श्री राधावल्लभो जयति । श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ।।

श्री हरिकला वेली

व्रज भाषा साहित्य सम्राट

चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी

कृत

www.RadhaVallabhMandir.com

www.RadhaVallabhMandir.com

।। हरिकला वेली ।।

श्री चाचा हितवृन्दावन दास

संसार में कुछ ऐसी महान विभूतियाँ जन्म लेती हैं कि जिनका बुद्धि वैभव स्वतः ही प्रकट होता है । हरिकला वेली के रचनाकार श्री चाचा हितवृन्दावन दास उन्हीं विभूतियों में से थे । श्री चाचा जी के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने कई लाख पद रचे किन्तु इनकी सारी रचनाऐं उपलब्ध नहीं हैं, इसी प्रकार इनके जीवन और समय के सम्बन्ध में कुछ भी तथ्य नहीं मिलता । इन्होने अपनी रचनाओं में भी कहीं अपने बारे में कोई संकेत नहीं दिया, लेकिन चाचाजी की प्रथम कृति सं० १८०० की प्राप्त होती है । इनके १५८ ग्रन्थों का पता लगता है । चाचाजी ने पूज्य चरण श्रीहिताचार्य की विचारधारा को सर्व साधारण तक पहुंचाने में बहुत बड़ा कार्य किया है । आपने इतना अधिक और बहुमुखी लिखा है कि कोई भी रचनाकार आपको पा नहीं सकता ।

श्री हरिकला बेली का सर्व प्रथम प्रकाशन हो रहा है । इस रचना में उस काल का सजीव वर्णन हैं । किस प्रकार यवनों के अत्यारों से पीड़ित साधुजन दुखी थे और किस प्रकार अत्याचार हो रहे थे, लोग इधर भाग रहे थे । हिन्दुओं का जीवन कितना असहाय था, बड़ा मार्मिक वर्णन है । ऐतिहासिक तथ्यों का, आपत्ति काल में जीव की पुकार और एक भक्त का उलहना आदि का वर्णन अत्यन्त सजीव है ।

सम्पादक !

www.RadhaVallabhMandir.com

अरिल्ल- (अ) ठारह सै तेरहौ बरष हरि यह करी
समन बिगोयौ देष विपति गाढ़ी परी ।
तब मन चिन्ता बाढ़ी, साधु पतन करे,
हरि हाँ मनहु सृष्टि संहार काल, आयुध धरे।

दोहा - भाजि भाजि कोऊ छुटे, तब मन उपज्यौ सोच,
अहो नाथ तुम जन हते, भये कौन विधि पोच ।
बारबार सोचत यही, गये प्राण बौराय,
संत करे बधि यमन ने, यह दुख सह्यौ न जाय ।
शहर फरक्काबाद जहाँ, गये सुरधुनी पास,
चैत्र सुदी एकादशी, तहां भयौ एक रास ।
तीन पहर रजनी गई, भेषनि कीयौ गान,
तहाँ एक कौतुक भयौ, जाको करौ बखान ।
आनन्द घन कौ ख्याल इक, गायौ खुलि गये नैन,
सुनत महा विह्वल भयौ, मन नहिं पायो चैन ।
ऐसे हू हरि संत जन, मारे यमननि आय,
यह अति खेद हिये भयौ, लीनो सोच दबाय ।
बालक बारह वर्ष कौ, सुपने पर्‌यौ लखाय ,
कूद्‌यौ ऊँचे भवन तें, पर्‌यौ ऊधे मुख आय ।
मोहि परम अचरज भयौ, स्वास है कि तन नाहिं,
उन उठि पटकाई भुजा, महा हर्ष मन माहि ।

कवित्त- मै तो बूझी कौन तुम, कहाँ ते जू आये हौ, उन तौ कही आयौ हों आनन्द घन पास तो । मैने कही उननि जू वृन्दावन धाम पायौ, उन तौ बतायौ, एक मंदिर ओट वास तौ । बहुरि मैं बूझी जू और सब मंहत कहाँ, निकट तें बतावौ बढ़ावौ बिसवास तौ । वृन्दावन हित रूप उन कही, पाछे मुरि देखौ तौ देखत सब रास तौ ।।१०।।

जै जे ये मलेक्षानि मारे ते ते सब बैठे हैं, कौतुक सो कहा हैं संदेह मेरौ टारिये । तब तो उन कही एक कला हौं, खेल्यौ हों दूजी पुनि खेलत हौ नैननि निहारिये । वैसेई कूदयौ पुनि मंदिर छवै भूमि गिरयौ, मेरौ न संदेह भाज्यौ, अचिरज विचारिये । वृन्दावन हित रूप में सब यह देखि कै जागि कह्यौ संतनि सौ अग्या हरि धारिये ।।११।।

(अ) ठारह सै सत्रहौ बर्ष बहुरि कै समन आयौ ऐसे सत्यवादी बात कला की न भूले हैं । वृज के जीव जन्तु सब कांपे अति मानी भय लाय कै मलेक्षा कछु चौगने से फूले हैं । भक्त वत्सल बिरद कौ पाछैं जू डारि दियौ, अबकैं तो वचननि अति अनुकूले हैं । वृन्दावन हित रूप बलि जै जै रावरे की, जिनकी पले हैं छांह तिने प्रति कूले हैं ।।१२।।

जनत ते पहिले आकावाणी बोलि कै जू कंस के बढ़ायौ दोष विपति डारी बाप कौ, भुवा के सुवन

www.RadhaVallabhMandir.com

“ श्रीहित हरिवंशचन्द्रोजयति ”

गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी महाराज

(टीकैत अधिकरी)

श्री राधाबल्लभ मन्दिर, वृन्दावन ।

www.RadhaVallabhMandir.com

सब धर्म ही के जाननहार वन में बनाये चौदह वर्ष सह्यौ ताप कों, बृज के अनुरागी जन छांड़े वियोग मांहि तनक हू न भीजे हिय ऐसे हूँ अलाप कों । वृन्दावन हित रूप हम कौ हू भरोसौ नांहि जानत हैं विवेकी लोग ओर ही ते आपकों ।।१३।।

कहियत बलवान ऐपै तुमते न निबल कोऊ रिपु डर भाजे है जाय छिपे जल में । जो पै कछु मानो बिलग तौ पै साख मो पै सुनो पीठ दै पलाने, देखो काल यमन दल में । भारथ में न आयुध धरे मागध पै मांगी भीख, मारयौ ताहि भीमसेन आपनि पुन छल में । वृन्दावन हित रूप हम तो यद्यपि आपही के हारयो तो विगार डारे संगहू के पल में ।।१४।।

आछी करी आपुन कलंक यह माथे धरयो, पाप के पहार मारे सीम यमन पटके । आंखिन कौ मूलाहिजो न हम हूँ सौं तोर सके, भीतरी तौ बात मिली, वाही पण लटक । हम तौ भरासौ बड़ौ रावरो ही राखत हैं तुम तो बार बार कला खेलत ज्यों नट के । वृन्दावन हित रूप हारि वेई वनै इच्छ बलवान काढ़े बन छांड़ि भटके ।।१५।।

गुण ग्राही करूणामय प्रीति के पारखू बड़े, भक्त वत्सल विरद सदा गावत है बांकुरौ । सब युग निभायौ भलें साखि श्रुति आगम है शरणागत पाल नाम नाहि दूजो आंकुरो । कहां कहां करी न सहाय जन आपने की लाग्यो नाहि तनक हू कृपा बतछल टाकुरो । वृन्दावन हित रूप अब हरि दिवारो काढ़यो, बोलि महायवन कौ दिखायौ भक्ति झांकरो ।।१६।।

धनी ह्वै न आवैगो हरि जन की तौ मै कछु जानौ भाग दास ही कौ खोटो है । स्वामी जो अनाकानी दीन्ही सुनि देखि हूँ के कैसे कहि आवत है कीन्हो मन छोटो है । एक ओर दोसन विचारत विवेकी जे दुहूँ ओर वन्यो असंमजस ही जोटो है । वृन्दावन हित रूप हरि हूँ के घर माझि जान परयो बल दांह हूँ कौ टोटो है ।।१७।।

दिशा भई भय की, अभय की न ठौर कोऊ, घण हू घहराय कै करत जन धाव रे । महा उग्र भवन गवन रज बरसैं है नाचत सिर, ताल मत्त हाथी ज्यौ छावरे हा नाथ ! हा नाथ ! करूणामय वानी यही देखत बेहाल सृष्टि आवत है जु तावरे । वृन्दावन हितरूप हो हरि महा सिन्धु मांहि परी भरी डूबै ज्यों नावरी कुदावरे ।।१८।।

अजित हरिनाम सब देय मुनि जानत हैं, असुरन सौं जूझे भक्त काज हूँ न मुरे है । ग्राह तै उबारयौ कैसे राख्यो हो परीक्षत जैसे प्रहलाद वरज्यौ हरिनाकुश सौ जुरे है । जहाँ तहाँ परी और अपने की मिटाई पीर अमित ही कृपा कीनी जाकी ओर ढरे है । वृन्दावन हित रूप हारे हमारी वार देखि कै यमन की सैना डरि वहूँ दुरे हैं ।।१९।।

एजू कहूँ कौतिक मैं भूले हो सनेही स्याम आयौ महाकाल यमन भयौ ताप तपनौ । ज्ञानी भूले ज्ञान अभिमानी सब मान भूले ध्यानी भूले ध्यान तपी तप जपी जपनौ । गेही काम धाम भूले भूपति विश्राम भूले जीव जन्तु अकुलाने साधु हिये कपनौ । वृन्दावन हित रूप हरि न विलम्ब करौ, टारौ या मलेक्ष कौ दिखावौ बल अपनौ ।।२०।।

प्रलयकाल घटा जैसी उमडी मलेक्षसैना, उड़ी खुर रेणु तासौ नभ छाय गयो है । थहराने देश

www.RadhaVallabhMandir.com

फहराने हैं पखेरू जन बाज की सी झपटनि में मृत्यु घेर लयौ है । हा नाथ ! हा नाथ ! टेरत सब नारी नर ऐहो नन्द नंदन निठुर काहें भयो है । वृन्दावन हित यह करूणा पाषान दृये तुमकों न व्यापी तौ हमें जू वायों दयौ है ।।२१।।

वृजचन्द व्रज ईष वृज कौ कलश वृजपाल करत आये और यौं ग्रन्थन में गायौ है । कहा कहा कष्ट नाथ सह्यौ नहीं वृज के हेत वृज कौ दूलह औ वल्लभ कहायौ है । वृज कौ तत्व वेद गूढ़ वृजराज आत्मज वृन्दावन हित करता विधि हू नचायौ है । सुनियो जू टेर यौं अवेर अब करवे नाहि, टारो या मलेच्छ कौ कहां धौ मुंह लायौ है ।।२२।।

हम ओर ही के पापी महा पीडित है आगे ही, तापै भारे पर्वत मलेच्छ आय ढांके हैं । फिरत हे गाम गाम विगरत है तुम्हारे नाम काहे तें दास भये रावरे धर आंके हैं । वृन्दावन हित रूप हो ! हरि भली सिच्छा दई, जाति हम गुलाम ते तौ सदाई ते बांके हैं । भले बुरे आप ही के आपु ही सुधार लेहु आवै ज्यों न लाज जू गल परा आय द्यां के हैं ।।२३।।

महक रही पहले ही बास जग सोंधे की सी, कहिये क्यों कलंक राखी बड़े की बड़ाई है । विप्र गऊ साधुन की घटती कराई यमन ताही कौ बुलाय बृज फेरी फिर दुहाई है । आग कौ लगावौ बुझायवे कौं तुम ही जाव चोरी हूँ करावौ पुनि पहरो देत आई हैं । वृन्दावन हितरूप दोऊ मिलि कुशल नाथ बाजीगार की सी कला परै न लखाई है ।।२४।।

सीत सौ कपै है तन ताप सौं तपै मन, देह सौं लहै है अति हटे बुद्धिबल सौं । धाम सौं हूँ फसे है बसे परवासन में विपति सौं गसे है यवन दल सौ । भूले जप जाप सौ औ हरि के अलाप सौं बिछोहौ माई बाप सौं मच्यौ है बाद खल सौं । वृन्दावन हित सौं भयभीत चित्त सौं न्यारे धाम वित्त सौं हरि खेली कला छल सौं ।।२५।।

हम जो परेखौ मान्यौ कौन काम आवै नाथ, सुपने चिन्हार चरण नाहिं करयौ आपकौ । कर्म धर्म लेस नाहि, योग यग्य वे प्रवाह, तपहू न धारयौ और भरोसौ जप जाप कौं । ज्ञान गुण करहू दीनौं और न बल बांह यों जग हू सों नात्यो छूट्यौ, बन्धु माय बाप कौ, वृन्दावन हितरूप सुख सोवौ तुम हू हरि बड़ौ ही भरोसौ मोकौं आपने ही पाप कौ ।।२६।।

छप्पय- कलयुग आयुध गहे, धर्म धीरज व्रज चल्ले, यमन रूप ही बन्यौ देखि चारौं चक हल्ले। तीरथ बड़ौ मवास तहाँ संग्राम मचायौ सुभट परम पथ चले हू तिन्हें हूँ नाच नचायौ । अतिसय भयभीत अनीत रची सब जग जीत्यौ यौ निदरि करि हा कृपानाथ कित हौ दुरे सुमनि वृन्दावन हितरूप हरि।।२७।।

सवैया- लरिकाई की टेरि गई न तऊ व्रजराज कृपा व्रज ईश भये । घर भीतर बोलि लयौ अरि कौं उरि आपु धौ कौन से देस गये । वृन्दावन हित किधौं सेावत हौ तो जगौ जनि घेरि कलेस लये । दृग खोलि कै रंचक देखिये जू ठकुराई के दाय मलेक्ष दये ।।२८।।

अब लाल ललाई कौ राखै बनै घर पै चढ़ि आयौ बली जू अहा । मृग की हरिहाई न पौरुष है चरयौ सूने ही खेत कैं माल लहा । हरि पाछैं ही बिरद बुलाय लयौ हम काल सुन्यौ कछू देख्यौ कहा।

www.RadhaVallabhMandir.com

वृन्दावन हित अब जानि परी हरिवार हमारी सित्याने महा ।।२९।।

गई ग्वाल की बुद्धि, तऊ न अजू ठकुराइत पाई धौ भाग वली । गुरु के घर जाय न नीति पढ़े सबाकै परी दीसि भलें जु भली । बड़ी सैना मलेक्ष की देखत ही कुम्हलाय गये मानौ कंज कली । वृन्दावन हित धनि कैसें कहौ भयौ नन्द के धाम लला कै लली ।।३०।।

घर बाहिर आय कै देखत नां परजा उजरी सब जाति चली । राधा हरि लीला कौ गान जहाँ तहाँ सूनौ परी वनराज गली । जानि अजान भये हो किधौ ये जू भूलनि भूलत बुधि पछली । वृन्दावन हित विसवास ठगे भयौ नन्द कै धाम लला कै लली ।।३१।।

पहले हरि विरद बढ़ायौ हो जन प्रणित मनोरथ के जु पली । छल कौ आश्रित ह्वै भेष धर्‌यो तिनहू की अब्धित आस फली । अब गोद में सीस धरयौ जिन है निर्भय तकि सोये चरण तली । वृन्दावन हित अब तेऊ ठगे वृजराज लला तकी और गली ।।३२।।

पहलें जू सहाय करी सब की अब रीझ अनौखी कहा बदली । शरणागत् पाल कहाय लये अब और ही बैठे जू बुद्धि सली । जन पीड़ित देखत नैननि हूँ मन मानत हो अति रंग रली । वृन्दावन हित संदेह पर्‌यौ यशुदा ने जन्यौ सो लला के लली ।।३३।।

गोविंद जू नाम धराय लयौ वृज देखौ गऊ किहिं भांति पली । हिय कंपत क्यौ रसना सु कहौ यह त्रास बड़ी सब सृष्टि हली । द्विज साधु मलेक्षनि पात किये वह जन्म पुरी यह रास थली । वृन्दावन हित बृज सोच महा यशुदा सुत कैसे भयौ निबली ।।३४।।

आगे अति भक्तन चाहत हे अब ताकत हैं हरि पच्छ बली । आगें जल फल दल फूलहु सौं रूचि मानत हे प्रभु भांति भली । आगे अपने मुख स्याम कही अति ही प्यारी वृज मोहि थली । वृन्दावन हित अब टेंटी तजी कंधार की मेवा कौ बुद्धि चली ।।३५।।

माला और तिलक की लाज बड़ी दै दै हरि पीठि बचाये जना । भीषण प्रण राखित ज्यौं अपनौ अर्जुन हित बाण सहे जू वना । माधौ हित बैंत प्रहार किये दरसाय दियौ हरि आप तना । वृन्दावन हित हरि बार हमारी जू चाटत हाथ चबाय चना ।।३६।।

परतीति बढ़ाय पुराणनि मैं वर्षे जु महातम धार सुधासी । अति काननि मीठी लगी वाणी सोई आनि परी गल गाढ़ी सी फांसी । अध बीच ही बांह छड़ाय चले वनतें काढ़े अति दैके उदासी । वृन्दावन हित अति बुद्धि बढ़ी अब भिन्न कियो कंधार कौ वासी ।।३७।।

कवित्त-भय सौं कहै आय दुके हैं गढ़नि मांहि भक्ति सौं चुके हैं हमें दीजैं उचित दण्ड कौं । पाप भूमि भारी तब भये हो दुखारी तुम बुद्धि जु बिचारी लाये यमन प्रचण्ड कौं । यह चलैगी कहानी तजी है वेद वानी भये हो दुख दानी कपायौ भर्थ खण्ड कौं । वृन्दावन हित कौ यश राखि लेहु, नित कौ बढ़ावौ भक्ति वित्त कौ निकासौ या बंड कौं ।।३८।।

वेद की विविध कहाँ है अचार धरम ना है कछु रीझे जू तहां हैं मलेक्षापण रचे हो । जिन लोप्यो

www.RadhaVallabhMandir.com

हिंद मानो लजायौ तिलक बानौ क्यों जू तासों मन मान्यौ अनीति ही खचे हो । विपरीत बुद्धि कीनी उपमा मलेक्ष दीनी बात करी हीनी जु विधर्मी कौ पचे हो । कहावै अब कितके मात के न पित के न वृन्दावन हित के जो दूरि तुम बचे हो ।।३९।।

भाजि भाजि छुटे है जू जैसे यमदूतनि पै तापै महा सोच अभै ठौर न दीसत है । जहाँ जहाँ वसे जाय तहाँ हूँ कलेश दूनौ विपता ही डायनि पसारे मुख हीसत है । याही हाथ बेचि दिये आप हू सम्हार छांडी वार वार गहै ग्रासिवे कौं घीसत है । वृन्दावन हितरूप एहो हरि दृग देखौ दास हूँ कहाये तऊ सी चढ़ी पीसत है ।।४०।।

एहो नन्दनन्दन कहावत बृजवल्लभ हे, ताकी अब घटती क्यों मलेक्ष पै कराय हो । बड़ोई परेखौ देखै उपज्यौ है भक्तन मन पाछिले विरद कौ कहौ कैसे विसराय हो । कीनौ बेहाल धाम सुनत नहीं उनींदे स्याम कहा बृजनाथ नाम कैसे अब धराय हो । वृन्दावन हितरूप राखि हो बड़ाई जो पै तोपै निर्मूल यमन वंश कौं जराय हो ।।४१।।

भली भई वांई दैनिक से बृजराज कुमार यमन ही कलंदर बुलायौ बल जौर है । बड़े बड़े अभिमानी गर्व तें नवाय दीनें यही जानि परति खोई सबनि की मरोर है । ऐपै नीच द्वारा दिखाई मन परेखौ यही वेद पथ लोपि करी ताही की जू ओर है । वृन्दावन हितरूप हरि हो निवाह कैसें कलियुग प्रवर्त ही बढ़ायौ धर्म घोर है ।।४२।।

पाप घटा कारी कै अंध्यारी काल आँधी उठी थहराने चारौ चक अति से भै बढ़ी है । उमडयौ गर्ल सिन्धु कै व्याल धौं समक्ष उड़े, किधौं सृष्टि अंत सेष मुख ज्वाल कढ़ी है । धर्म के विध्वंसनि कौ मध्य देख आयौ यमन मानौ यमराज दंड देवै मति मढ़ी है । छाड़ी हिदमाने हद कियौ कुल चक तीरद वृन्दावन हित नीकी कला स्याम गढ़ी है ।।४३।।

गिरि हूँ धर्‌यौ हो कर, जिन हित न भारौ लाग्यौ व्याल मुख पैठे हैं सहाय जिन करायवौ । काली सौं लपटे नचायौ विधि जिनकें हेत बहुत विधि दिखाये रूप वैसे कौं हरायवौ । धेनुक वक केशी वृष सकटासुर भंजि डार्‌यौ दावानल पियौ धेनु नन्द की चरायवो । वृन्दावन हित रूप हो हरि तुम सांचे तब कालगमन जैसे ऐसे याहू कौ जरायवौ ।।४४।।

काल ही बुलायौ है हकारि कै यमन रूप मथुरा वृन्दावन बृजभूमि कंप भई है । देह गेह धन की विसरि गई आसा सब ऐसी तौ अनौखी हरि लीला निरमई है । भाँति भांति रक्ष करी ही जा मण्डल की लाल ताकौ तौ उजारिवैं कौ मन सा मन ठई है । वृन्दावन हितरूप कला दोऊ पूरी परी, अजहूँ कुटेव कुल बिगार की न गई है ।।४५।।

घोर कलिकाल को प्रताप तो दिखायो लाल, महाकाल रूप तौ मलेक्ष प्रगट कर्‌यौ है । आपने ही धर्म की तौ घटती कराई आपु दोसन हमारौ इति विचार मन पर्‌यौ हैं । सेवक जी चूकै तो स्वामी ही सुधारि लेत, स्वामी ही के चूके कौ परेख्यौ उर भयो है । वृन्दावन हितरूप विरद हूँ विगारि डार्‌यौ स्याम ही स्वरूप माथे स्याम छत्र धर्‌यौ है ।।४६।।

झूँठी हूँ भक्ति कौ सांची करी सब युग युग सांची हूँ भक्ति अब झूठी सी दिखावत हो । कौतिक

www.RadhaVallabhMandir.com

तुम्हारे सब तुमहीं विचारौ लाल हमें अब अति हिये खेद उपजावत हो । घोर कलिकारी निसा माँहि भक्ति मानु छिप्यौ तसकर बढ़ाये आपु अति सुख पावत हौ । वृन्दावन हित रूप संत की बड़ाई करि मेरे जान थोथो सौ गाल ही बजावत हौ ।।४७।।

यमन ही कलन्दर कारौ आपु इच्छा पाये आयौ और सब तेज ता आगें लैनवायौ है । और कला भूलि गये , यही कला प्रगट भई, सांचे हूँ धर्मनि में छल सौ दिखायौ है । युग युग में भक्ति कौ बितान जग छायौ है , अब कछु मन में मलेक्षा अति भायो है । वृन्दावन हित रूपप्रलय को न समय नाथ कौन जाने कौन हेत स्वांग यह लायो है ।।४८।।

हरिनाकुश उर खम्भ ते प्रगट ह्वै भक्ति ही विस्तारी प्रहलाद अभय कियो है । वेन्नि कौ प्रहार कियौ , प्रथु ह्वै प्रकास्यौ धर्म, राम रूप ह्वै कै लंकेश दण्ड दियौ है । कंस कौ पछार्‌यौ जरासंधि टूक करि डार्‌यौ, भक्तनि की रक्षा हेत अकुलात हियो है । वृन्दावन हित रूप उलटी बनी है अब बाप ही के देश कौं उजार मत लियौ है ।।४९।।

तुंग तरू बेलिन की छांह पले हैं जो, ते तौ धूप धूरि में फिरत हैं निरादरौ । यमन बुलाय कैं निकासे देश देशनि कौं कहा धौं बिलगु मान्यौ पूजत पद सादरौ । भले भले संत और महंत सब लोप किये हमकौं न मीच भूमि सकत दूरि वादरो । वृन्दावन हित रूप यमुना अभी कू छाँडि पीवत हैं खारी जल चौहनु को गादरो ।।५०।।

सवैया-तुम ओर ही के विगरे हे लला प्रसिद्ध पुरान महामुनि गाये । गभ में आवत कौतिक कीये मात पिता पग बेरी भराये । गोपिनु सौ विरचे करि प्रीति सर्व यदुवीर प्रभास पठाये । वृन्दावन हित रूप अबै सब सैना मलेक्षा की ब्रज में लाये ।।५१।।

कछु सोवत से अलसात कहा विनती मन में यह लाइये जू । नन्द नन्दन केलि कला कमनी यश ऐसौ ग्रंथ निगाईये जू । उजर्‌यो यह जात पिता हूँ को देश कृपा करि फेरि वसाईयेजू । वृन्दावन हित करि यमन हतौ व्रज दूलह विरद बढ़ाइये जू ।।५२।।

कहूं देश विदेश न स्याम गये ब्रज काहे तें ऐसी धौं रोरि परी । कह्यौ श्री मुख सत्य रहों ब्रज में तजि जाऊँ न हौ पल एक धरी । बलि टेरि कै बेगि सुनाईये जू इच्छा करौ जैसी धौं पाछैं करी । वृन्दावन हित वृजबल्लभ जो तो पै लाज की वार जू जाति टरी ।।५३।।

हम दोस अनन्त भरे हैं कछु और ही दण्ड न दियौ लला । यशु काहिन आपनौ राखि लियौ उपहास बढ़ायौ जु धन्य भला । घर हू न सम्हारि सके जु सुनौ पुरूषारथ को जु कहें सबला । वृन्दावन हित तजि चौसठि हूँ जु पठानहि द्वार ह्वै खेले कला ।।५४।।

सब लोग प्रसिद्ध कहैं जग में कर छाँडि तना हि जू काह कौ छीये । पणतारत ता सौ सदाई भलै धन धाम सरीर ही अर्पित दीयें । तुम लोकनि ईश कहाय कै जु धरी वाने की लाज न नेक हिये । वृन्दावन हित हरि ऐसी करी हम क्यौ जग में अब वादि जियें ।।५५।।

हरिनाकुश कंस, ते भारौ नहीं जिन आगै धौ हिम्मति हारिये जू । लंकेश भूमासुर तै न वली ,

www.RadhaVallabhMandir.com

भृकुटी कौ चढ़ाय पछारिये जू । अब छैलता ऐंड कौ छांडै बनै करूना करि नेक निहारिये जू । वृन्दावन हित हरि ब्रज निर्भय बसै, महा पापी मलेक्ष कौ टारिये जू ।।५६।।

हरि कान सुनो किधौं देखौं नहीं वृज ऐतो कुलाहल माँचि रह्यौ । मथुरा वृन्दावन वासी भगे दावानल ज्यों भय यमन दह्यौ । किधौं जानि अनाकनी दीनी भली अपराध कोऊ जू परयो न सह्यौ । वृन्दावन हित विपरीत भई हरि लीनौ कै मानि मलेक्ष कह्यौ ।।५७।।

कहो कैसे भरोसौ करै कोऊ शरणागत् हूँ भय भीत भये । पद सेवत लेतहूँ नाम सदा जग के दुख द्वन्दन एकौ गये । रज आसा लगे बहु कालते जे तेऊ देश विदेशनि कौं पठये । वृन्दावन हित पढ़ी रीझ बढ़ी उलटे कलि धर्म दिखाय दये ।।५८।।

कवित्त-घर घर मैं सरधायुत सेवा पुनि लेते नाम, घर घर में घण्टानाद झालर बजायवो । घर घर में जन्म कर्म मानत हे हरि ही के घर घर में राधाकृष्ण लीला को गायबो । घर घर में कृपा जू मनावत हे रावरी ही ; घर घर में परम धर्म ही को मन भायवो । वृन्दावन हितरूप कान दै के सुनौ हरि तहाँ नीठ ढूढैं अब चरनामृत पायबो ।।५९।।

देखौ रे देखौं अति गर्व को प्रहारी नाथ, कैसो हरि लायो यमन जाको नाहि खूंठ खोज । रचैं परपंच खोटे विसनन में दईहत माथे पै हरि है यह भूल फँसें माया पोंच । आपनो तो अलप विचार, बल आयु है हरि तो नवाये सहस्त्रबाहु से अर्जुन भोज । वृन्दावन हित यौं जानि डरौ कि अथवा प्रीति हरि कौ भजौ रे भइया जीवो जौ लों चन्द रोज ।।६०।।

गायन को दूध घृत बिसर गयो एहो नाथ, वृज के जनन सों जू प्रीत फीकी परि गई । साधुनि के भजन सौ धापे कछु मोरयो मुख किधौं वन भूमि यह कुप्यारी आप कौ भई । जानि परी आनाकानी दीनी ओट से भये, प्रलय सी मलेच्छ करी नैक हू न सुधि लई । वृन्दावन हितरूप साहिबी बढैगी कैसे कपिला बृज जनन कौं बुलायौ महा निरदई ।। ६१।।

पक्षिान के वृक्षान के पशुओ पशुपालन के भये घरघालक जू रची है अनीत सी । माली हू पौधा जो लगावत सु काटै नाहिं तुम जो विचारी सो तो दीसत विपरीत सी । रावरी बड़ाई सो तौ कौन के जु आबै काम हमकौ भई है प्रतिकूल भयभीत सी । वृन्दावन हितरूप और काकौ ह्वै है भलो , इनहू की यह गति करी ही जिन सौ प्रीति सी ।।६२।।

सवैया- मनसा मन में मन मोहन मीत कहौ जु कहा उपजी हैं नई । कोउ रंक हू जो पै जू होहि महा ताहू कौ धौं एती विचार भई । अपने और आप कौ राखे रहै रच्छा करै माली ज्यों बेल जई । वृन्दावन हित घर खोयवे में ठकुरायत कैसे धौं बाढ़ै दई ।।६३।।

गुड़िया को सो खेल कियो जूकहा पद सेवन को फल एतो कढ़यौ । तुम कान दै एक सुनी न लला वनवासिन के तौ जू दुख रढ़यौ । हरि नाम उचारन ज्यों ज्यों कियौ विपताही को सागर त्यौ त्यौ बढ़यौं । वृन्दावन हित हठ धर्म गह्यौ लरिकाई की टेर कौ रंग चढ़यौ ।।६४।।

हम पूत सपूत भयौ हो सुन्यौ, यशुदा अरू नन्द के ढोल बजै, सब देवन के आनन्द महाकरि

www.RadhaVallabhMandir.com

फूलन वृष्टि अत्यन्त गजे । वृज के सब लोग सनाथ किये, हम काज परै गुण कैसे तजे । वृन्दावन हित कहिवे ही परी लरिका ठकुरात बाँह लजे ।।६७।।

बछरा किधौं गाया चराई लला पिंजरा में लराई किधौं लाल मुनी । बगुला खर मार बढ़ाई मिली गाय लयौं सब देश दुनी । अलकैं धुंधराली दिखय ठगे पगिया जो कसु भी लपेटी चुनी । वृन्दावन हित अब दास की बार कढ़ी सब पोल सुनी न सुनी ।।६६।।

मुख आयके बेगि दिखाइये जू कित हो इबके तन तोषत हो । स्वामी और दास को नातो बड़ो बनि आवत नाम न हौसत हो । नहिं देख्यौ जु ईख को खेत लला बिनु स्वाद ठठेरन चौसत हो । वृन्दावन हित जु बुलाय मलेच्छन गाँठ के गूदरे खोंसत हो ।।६७।।

विलगौ जिन मानों रहे वन में बैठे नहि राज सभा जु बड़ी । शरणागत छांडे को दोस कितौ यह लाज हिये ताते न गड़ी । दास को धर्म चले रूख लिये रहै चित्तकी वृत्ति चरण अड़ी । वृन्दवन हित नित अच्छा करै स्वामी के हियै कृपा उमड़ी ।।६८।।

अपनायत धर्म रहै तब ही वलवान सों संग ह्वै जूझिये जू । अपराधी हूँ यद्यपि होय महा शरणागत जान अरूझिये जू । वृन्दावन हित मुख मोरयौ लला, अपनी घटती नहीं सूझिये जू । स्वामी पद भारौ सुमेर हू तै हरि हांसि हूँ खेलन बूझिये जू ।।६९।।

लरजे न हिये एतेहु पै, वृज आसा धौं रावरी कौन करै । भटकाये विदेशन यद्यपि हैं उपहास परैगो जू आप गरै । तुम नाथ बने जिनके सिर पै निगुसायें से ते सबते जु डरें । वृन्दावन हित करूणा न दृये बुसि जायेगी तौ जु घरैई धरै ।।७०।।

छछिया कौं पियो जु चराई गऊ ठकुरायत कौ कहा जानै कन्हैया । नन्दराय की सीख सुनी न लला पय प्याय जिवायौ यशोमति मैया । ग्वालन संग फिरयौ वन मांहि जु पोलेहि बाँस की वंशी बजैया। वृन्दावन हित अब ताकैं भरोसे देस बसै कहि कैसे रे भइया ।।७१।।

रज प्राप्त की मन आसा बड़ी सब ओर ते आय परे जु विवेकी । तिनकां भय मलेक्ष की आंधी उठी, बगराय दये न दई बल थेकी । दया करि दीन कै बास बसें सुख पावै नहीं कोउ एका जु एकी । वृन्दावन हित यह लेहु विचार, करी यह बात बदी किधौं नेकी ।।७२।।

हहराय भगे दिस ही दिस कौं, महाकाल मलेच्छ की आई घटा । दुख भीज गये मन हू मन सौ दमकै ओ दुरै भय भारी छटा । न परोस को नाते हूँ मान्यो अजू खयमाने के नामे भयौ हौ नटा । वृन्दावन हित हरि हांसी करी बरजोरी छुटायौ कलिन्दी तटा ।।७३।।

कवित्त-कलि के कलंक को तौ तुम हू डरत नांहि युग को कहौ जू दोष कहाँ लौं बिचारिये । जो पै प्रकृति कछू रावरी हूँ और भई तौ प जू हमारो दोष मनमं हूँ न धारिये । नीति औ अनीति अब अपनी ही इच्छा भार युग के अनुसार होत संका निरवारिये । वृन्दावन हित रूप सांवरे सनेही तो पै, कोटि कोटि कलियुग वारि फेरि डारिये ।।७४।

www.RadhaVallabhMandir.com

‘‘ श्रीहित हरिवंशचन्द्रोजयति ’’

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

www.RadhaVallabhMandir.com

मनहू मलीन भये तनहू अनत डारे, धन हूं बगेर कें निकास दिये घर तैं । छूटे तरू वेली मूल रास थली यमुना कूल । जामै नित न्हाय के अमी ज्यौं पान करते । छूट्यो संतसंग रंग ताभै रस भई चोज छूटयो कथ सुनिबो सुनि प्रेम गरो भरते । वृन्दावन हितरूप कुंजन कौ दरस छूटयौ रजकौ कृपासौ विचरते ।।७५।।

औंगन न हिये धारौ, कृपा दृष्टि कै निहारौ जन आपदा कौ टारौ, अब क्यों विलम्ब कीजिये, अहो जगत त्राता बलभद्र जू के भ्राता जन अखिल सुखन दाता पुकार वेगि लीजिये । परजा भई दुखारी नप चोर कुटिल भारी हा नाथ वृज बिहारी दुख कासौ कहीजिये । वृन्दावन हितरूप हो सुख धाम स्याम कंस को पछारयौ ज्यों त्यों याहू पटक दीजिये ।।७६।।

ढोल सो बजावत हो कौन सी बड़ाई पाई लाये हो बिलायत तें बोल के कलन्दर कौ । येई ब्रजवासी बलवाँह बसै आपनी जू जिन हित हटायौ बली देखौ जू पुरन्दर कौ । वृन्दावन हित रूप खोटी सी ही रची धर्म की ग्लानि भई यशन गुण मन्दिर कौ । कौतुक तुम्हारौ ए पै सृष्टि ही को अन्त यों बार बार लाय कें नचावौं यवन बंदर कौ ।।७७।।

टारौ जू टारौ अध्यारौ महाकाल, राति, आलसहूँ न कीजै नाथ ये जू तनकं कर्म कौ । लैहे को नाम कौ बसेगो को तुम्हारे धाम जो पै लाल पचि हौ न आपनी हूँ शर्म कौ । हिय के लोचनन मैं छायो है मलेच्छ रोग एहो सदवैद्य हरि टूर करौ मर्म को । वृन्दावन हितरूप वृज के जू दिन मणि, गोपाल कृपा प्रात तामै प्रकासौ परम धर्म कौ ।।७८।।

दीन ह्वै देख्यौ साहस हूँ बांध्यौ बडौ रज ही की आसा प्राण बुहत तन किये पात हैं । नाना दुख पीडित लगे हैं तऊ वाही और आली ज्यों मड़रात प्राण आवत सकात हैं । छिन्दि विन्धि डारो मलेच्छ कौ व्रजेश कुंवर, कुहर कौ विधारै ज्यों दिनेश गात गात कौ । वृन्दावन हितरूप तेज को प्रकाश्यो यों परम धर्म ना तरु यह रसातल को जात है ।।७९।।

बई विष बेल स्याम धहक कै बढ़ी है जू भाँति भाँति जगमें फल फूलन सौ फूली है । भोय गई जाकी सुबास माहि सबही सृष्टि कौतुक अलौकिक रच्यो महाभार झूली है । भक्ति महारानी मुरझानी या लपट माँहि वृन्दावन हितरूप तुमको प्रति कूली है । आग कौ लगाय घकौ न बात सुचेते हरि पाछैं पछितैहौ जू बस्तु बहुत न भूली है ।।८०।।

जो पै कहौ कौन भाँति मो कौ दोस दीजत है तौ पै सुनै ए जू आप मुख की यह बानी है । अर्जुन सों कह्यो मेरी इच्छा बिन न हालै पात गऊ विप्र साधु पात भये क्यों न जानी है । कौन धौ मलेच्छ तुच्छ धाम ओर देखि सकै, ऐ पै सैन भीतरी मिली मीन पानी है । वृन्दावन हितरूप दाग कौ लगायौ एक जू अपने ही हाथ दैखौ आपकी रजधानी है ।।८१।।

छप्पै-जबहिं अटक बंध छुटयौ, खटक तब तें जग बाढौ खुल्यौ नर्मदा घाट हित दुहूँ दिसि मै गाढ़ी, हल्यौ चकत्ता चक्क सृष्टि दुख सिन्धु मगन अस तुम बिन हो वृज नाथ चलत अब कहि काको बस, अति दावानल की सी झपट दपट उठत भय दत यमन । भनि वृन्दावन हित रूप बलि अब कृपा करौ राधारमन ।।८२।।

www.RadhaVallabhMandir.com

सोवत औचक परत महा सुपने भये भीते, घर घर यमन चबाब भजन बिन सब ही रोते फीके परि गये बदन सदन दीपक बिन हीने । ग्राम और पुर देस बागवन भय के कीने । नर नारी सुनत बेहाल सब प्रगट होहु नग घर हरी । भनि वृन्दावन हित आय हौ वृजनाथ गहर करौ जिन धरी ।।८३।।

उफनि उठयौ दुख सिन्ध लहार मरियादि जो टूटी । पैरत तार्म सृष्टि आस जीवन की छूटी । मनहुं भयौ विधि अन्त प्रेत दाने दल साजै । फिरत कपावत मही यमन अति ही बल गाजैं । गुरू जालन्धर अस सल्लि मधु इन मारि अभय किये सन्त जन यह विधि पीसौ इन खलन कौ हित वृन्दावन वृज रमन ।।८४।।

कुण्डलियां-तृण कौं हरि बज्जर करैं, वज्जर कौ तृण होय, बज्जर कौतृण हो । शहर दिल्ली से लूटे । साह भये बेहाल अटक नद से बंध टूटे । परी बडे घर पोल क्यों न परजा दुख पावै । चुक्यो चकत्ता नीति बली अरि आय दवावै वृन्दावन हित हरि रची ताहि न टारै कोय, तृण को हरि बज्जर करै वृज्जर कौ तृण होय ।।८५।।

जो हरि चाहैं सो करै अनबन होय न और, अनबन होय न और राज कलियुग कौ दीयो बालि सजाती यमन जगत उत्कर्ष जु कियो । सब कौ भंजौ मान करी घर घर में भाड़ी । मै मेरी गये भूल मेरी गये भूल रही घर ओटत हाड़ी । कोऊ छूटै भाजि कै भये काल कोउ कौर जो हरि चाहै सो करैं अनबन होय न और ।।८६।।

सवैया-जिन पै हरि हाथ बँधाय रहे तिन सौं अब बूझिये ऐड़न येती । चुटकीन नचाये बडेई भये प्रभुता न रखै ये करौ तुम केती । मलेच्छ बुलाय डरावत हो । ए जू जानि परी लरकायत जेती । वृन्दावन हित बहि पानी गयौ, यशु खेय रह्यौ अब औयशु रेती ।।८७।।

हरि खेलत ढूक मिचावनी सी चौगान दुरै न बनै न कहि की ओट छिपै तहां जाय बताये को दोस गनै को गनै कलि हू में महा कलि लीला रची ताकी देखि विदेकी भनै न भनै । वृन्दावन हित हरि जानि परी अब कीजै मलेच्छ मनै जुमनै ।।८८।।

कवित्त- जाकी जल बंद एक पापन को चरन हे ताकी तौ महिमा और कहाँ लौ विचारिये । राधिका किशोर जोर जामें जल केलि करैं नमो-नमो भानुजा यों बिनती मन धारिये । भरी रस रंगन सौ कृपा की तरंगन सौ हे कलिन्द नंदनी सुदृष्टि अब निहारिये । वृन्दावन हित दे पुकार, सुनोचित्त दै गौरंग पद सेव्य दिन बुलाय तीर डारिये ।।८९।।

अहो कलिंद नंदिनी वृजेश कुमार भानजा सदा तरंग सींचनी विनोद भूर गाइये । न बायौ हमें दीजिये दया ही बडी कीजिये, अपनाय आप लीजिये न दास हिये लाइये । युग युग जन तारिनी महाँ अघहिं प्रहारनी हमारी पीर टारिनी सहाय हेत आइये । वृन्दावन हितरूप विनती धर्म अनुजा सुनि कृपा बांह दैके अब तीर हमें बसाइये ।।९०।।

यमन पापी विदा दीजै, अब हमारी सुधि लीजै बिलम्ब क्यों अब कीजै अहो कलिंद नन्दिनी । कब

www.RadhaVallabhMandir.com

धार नैन दरसै, कब प्रेम हियो सरसै अंग वारि परसै, सो धन्य घरी बन्दिनीं । अलाप आप सुनियों कृपाल ह्वै सु गुनियो विहार भूमि विहरनी प्रचंडताप कंदिनी । वृन्दावन हित गावैं, यह टेरि कै सुनावै अभय वास तीर पावै जन दायक अनन्दिनी ।।९१।।

छप्पै-वंदौं निर्मल नीर रवि सुता इत चित कीजै, बृज हित करूणा द्रवौ विदा अब यमनहिं दीजै । हे अनुजा धर्म राज रूच्यो क्यों यमन सुरापी । कारीधार बहाय जीव हिसक यह पापी । अब बलि-बलि हौ गिरि बेधनी अति उग्र दण्ड इहि सिंर धर्‌यौ । भनि वृन्दावन हित रूप तुव इहिं दुश्मति कौ बाहिर करौ ।।९२।।

हे करूणा मय कुशल विपन चूडामणि रानी । बिनती यदपि न उचित तऊ श्रवणनि सुनौ वानी। इच्छा जाकी मलिन यमन चढ़ि ब्रज पै आयौ । त्राहि त्राहि जन करत अधिक भय हिय अकुलायौ । कृपा भवन जन दुख दवन अति मृदुल चित्त कीजै यतन । अब अज्ञा शक्ति अनंत दै भनि वृन्दावन हित रक्ष जन ।।९३।।

सवैया-शरनागत आनि परे वन में रानी के दास कहावन कौं । बल गर्व भरे न बदैं काहू तप तीरथ, क्यों मन लावन कौ । तेऊ आनि मलेक्ष निकासि दिये भई बात जू नाम धरावन कौ । वृन्दावन हित बलि कैसे कहौं पै कही करूना उपजावन कौ ।।९४।।

इच्छा रूख लिये, जु कहौ बल बुद्धि बिचार परै न कही । किधौं रंग बिहार रचे सुख में जन हेत सम्हार न ताते रही । किधौं औगुन जान्यौ हमारो बडौ इतने हूँ जानी न हाली मही । वृन्दावन हित किधौ भाग हमारे अपूरव ही यह आधी वही ।।९५।।

जिनकें सुख लाड पले हैं लला गुण मानत हौ क नाहि तहां कौ । पय धापि पियै ललचात रहे कह्यौ श्री मुख सत्य रिणी हौ जहाँ कौ । तिन गोपीऔ गायनि हेत कछु अब दीनौ है खोलि कलेश को नाकौ । वृन्दावन हित हरि मूदिये जू डरपे जन देखि अकाश कौ झांकौ ।।९६।।

चोरीऔ जारी जू दोष बडोई सो रावरे माँहि विराजत दोऊ । प्रसिद्ध पुराणनि महि लिखे अब ढाकैगो ताहि कहां लगि कोऊ । ऐसे सौ पूरी परै किहि भाँति तजी बिधि वेद तवै अब सोऊ । वृन्दावन हित ये औगुन अंग भयौ है लला घर बाप कौ खोऊ ।।९७।।

विधिसंकर और सुरेश हुँ से याही व्रज की रज कौं तरसाये । उद्धौ निज प्रीत्य सौं याची तिनकौ तप हेत विदेश पठाये । वृन्दावन हित यह बात बडे की कोतिक देखत जात न गाये । बलि रावरी भलनि पै जइये अब न्योति मलेक्षनि कौं घर लाये ।।९८।।

अरिल्लः- बरवै हो विष धार भर्‌यो श्राय नद महा । सोक ग्राह ता माधि सूख दुख तट अहा। वृनदावन हित रूप वेगि हरि आईयौ । हरि हां ज्यो आये गज वार नाथ यौं धाइयौ ।।९९।।

अब वज सकल कहाये भृत्य गिरि धरन के । तुम को आवै लाज पीत पट धरन के । अब हूँ यमझि सुधारि लेहू जो कछु री । हरि हो वृन्दावन हित रूप नाथ मानो कही ।।१००।।

www.RadhaVallabhMandir.com

जिन वृज वासिनु खान पान पोषे सु दिन । तिन सौविरचि कहावौगे हरि कृत्यघ्निन । होहि बडे कौ कुयशु बडौ तब खेद मन । हरि हो वृन्दावन हित रूप राखि यशु हरि यमन ।।१०१।।

मनहु करत ववन यमन प्रगट्यौ मनु काली । ताकौ सब विधि यतन कृष्ण जानत वन माली । हनौ दुष्ट कौ सीस अहो वृजपति लला । हरि हो वृन्दावन हितरूप प्रकाशौ वह कला ।।१०२।।

कवित्त-काहेते सुनत नांहि रोग दिन बढ़ावत हो, प्राणनि कौ छीलि छीलि ताप ही कौ देत हौ । मोटो अपराध कोऊ बाँध्यौ है हमारे गरैं ताही ते बार बार करत जू अचेत हो । करनी तौ रावरी विदित जगत जानी परी काहेतें कहावत जू कृपा के निकेत हो । वृन्दावन हितरूप नाक स्वांसा आई है वेगि दै यतन कीजौ कहा अति लेत हौ ।।१०३।।

ऐसी कछू व्यारि जू वही है विपरीति युग छोटे बडे सब ही चक फेरी सी देत हैं । भई है त्रिणुका बुद्धि परी है कुफेरनि में सूझै न उपाव पुनि भांवरी सी लेत है । अपनौ परायो देखि मत्सर ही ज्वाला जरै, धर्म कर्म भूले पुनि लज्या नही देत है । वृन्दावन हितरूप सांचे हौ तुम हरि हम ही लुनैगेबयो कलि पाप खेत है ।।१०४।।

सोक ही की आगि माँहि कहाँ लौ जराय हौ जू परे हैं विकट वन संसार महा घेर में । दूरि तमासौ कछु देखत हौ रीझि रीझि, दयाल कौन काम बात डारी अरू झेर में । वरती में तेल घीव डारत हौ हौसि हौसि ताहू पै तो पौनी एकौ कती नाहिं सेर में । वृन्दावन हित रूप बंदिये तुम्हारे पाँय नेकहू पसीजत न लगाई रूई ढेर में ।।१०५।।

धर्म हूँ सौं धीजे नाहिं, नाम लेत रीझे नाहिं, कृपा सौं पसीजे नाहि कैसे दुख भरिये । धाम हूँ ते टारे विपति सागर जन डारे डोलत विचारें कहाँ जू जाय मरिये । रंग अति रंगे हौ के गये कहूँ ठगे हौ डरि तुमहूँ भगे हां परेखो तौ न करिये । वृन्दावन हितरूप समझी हूँ परत नाहिं रीझनि अनीखी कौं कहाँ लै ठौर धरिये ।।१०६।।

टाटी दै के पारधी जू मारत है जीव जंतु ऐसो कछु धर्म कहा बडे बड गह्यौ है । हम तौ सुनी वेदऔ पुराण श्रुति आगम हूँ हिसिकता धर्म में काको यशु रह्यौ है । मृत्यु कौ तौ मारण अनेक भाँति देखियत कहा यामै प्रभुता मलेक्षा मिली चह्यौ है । वृन्दावन हित रूप गीता एकादश में भाष्यौ सत्य रच्छकरों श्री मुख धर्म कह्यौ है ।।१०७।।

धूरि बांटी जेवरी कहौ जू किनि बांध्यौ काहि मूंज कौ कटायौ वन कौने काढ़यौ रस है । सुपनु कौ धनु पाय कौन जू धनिक भयौ मावस में पायो किनि ससि को दरस हैं । गगन देखे फूल जलव्यात मंछी कौ आधी निसि उदै रवि बतावै कहा बस है । वृन्दावन हित यौ मलेक्षा कर विगर्‌यौ धर्म ताकौ हरि चाहत गवायौ लोक यश है ।।१०८।।

राखौ जू राखौ यह रावरी बड़ाई जग, भक्तनि के हेत उर में रहत ही चटापटी । चक्र गदा पानि धरै जन की जू रच्छा काज , खग पति आरूढ़ रहत लागी जू खटापटी । वृन्दावन हित रूप अब तौ कलियुग व्याप्यौ तुम्हें रीति यौं अटापटी । विप्र गऊ साधु पशु पंछी तरू वेलिनु जू बोलिकैं कटेला हरि

www.RadhaVallabhMandir.com

लगाई कटाकटी ।।१०९।।

सवैया-गुण स्वारथ पै तुमहूँ अटके तौजू भक्ति कौ गाहक कौन रह्यौ । गुण हीन महा निधनी गानिकै हटि पाछें गये कर नाहिं गह्यौ । गुणवान सजै गज वाजनि कौ हंस रीझि मलेक्ष की ओर चह्यौ। वृन्दावन हित उतमें वरषे इतमें जल एक न बूंद बह्यौ ।।११०।।

यह साहिबी फैली फिरै जग में पापी औ यमन हंसावत हौ । भागौत धर्म अब ढांकत हौ कछु ऊवट पथ दरसावत हौ । अपने जान की ये अनाथ से जू, विमुखन की सभा सरसावत हौ । वृन्दावन हित पूरी भली पग लागत हूँ तरसावत हौ ।।१११।।

कलिकाल कौ ओर न आयो लला याते हमहूँ न परेखौ करैं । युग द्वापर की यह संधि लगी भयौ धर्म को लोप जू देखि डरैं । कलि अन्त कौ धर्म भयौ पहिलें इहि सोच विचार परे हहरैं । तुम हूं संभर अवतार धरौ वृन्दावन हित हम यौ झगरैं ।।११२।।

अरिल्ल-धर्म धर्म जू कहियतु है वपु रावरौ । हम सिर कहा निहारौ जो रच्छा करौ । भुगतैगी युग बहुत प्रथम ही यह कहा । हरि हाँ वृन्दावन हित आवत है अचिरज महा ।।११३।।

समरथ के घर पोलि विवेकिनु त्रास है । अपनी ढकै नआप करै को आस है । बिन आयें कलि अंत अंत अति लेत है । हरि हाँ वृन्दावन हित लगत सिर देत हैं ।।११४।।

सवैया-दोस कियौ हम हरि ही लगै, कहा बांदर मोर गऊनु बिगारयौ । कलि हूँ नृप कै सुन्यो न्याय बड़ौ अंधेर अजू इनहू करि डार्‌यो । वृजराज लला की कला मैं सवै यौ नारद आदि विचारयो । वृन्दावन हित स्वामी कौ कियौ सिर ऊपर धारै पै न्याय में हारयौ ।।११५।।

छप्पै-खाई जाकी सिन्धु कोट कंचन मय कीनौ । योधा ऐसे वली काल काराग्रह दीनो । भुजा बीस दस सीस लक्षाकै ऊपरि वारा । वन्धु महाभट सवै संग सैना बिनुपारा । हरिकोप दृष्टि जर्‌यौ कनक हूँ कुल सहित मारि यशु कपि दियौ । को तुच्छ यमन जिहिं देखि अब वृन्दावन हित हरि दुरि गयौ ।।११६।।

कवित्त-नीत पातिसाह ऊवयो स्त्रवनि मनसूबा चूवयो बहुत दिननि जात कूवयो का बल दरौ रोकिये । वे स्वामद पान करि छकि गये, अमीर जेते रज तम की धार कारी बूड़े को विलोकिये । दिल्ली भई बिल्ली कटेला कुत्ता देखि डरी, भूल्यो महमद साह पहिलें अब काहि टोकियै । बावर हिमाऊँ को चलाऊ अब वंश भयौ ताकौ यह फैल्यो सोक परजा कर्म ठोकिये ।।११७।।

सवैया-धर्म की हानि भई तब ही जब पूजि कृतज्ञसौ बैर धरयो मन । लाज की हानि भई तब ही जब चोरी औजारी बढ़ाऔ महापन यशु की जग हानि भई गनिये पाये हूँ अजू खरचै नाहीं धन । वृन्दावन हित स्वामी पद क्यों सेवक कौं जू विगोवत हौ तन ।।११८।।

तरु सैल सलिल जग भार जितौ अवनी कहै हौं सिर नीके धरौं । सब भाँति सबै सुख देति रहौ

www.RadhaVallabhMandir.com

जल ऊपर राखी तऊ न गरौं । अघ और अनेक सहारि रहौं हरि भक्ति जराई हैं हौ न डरौं । वृन्दावन हित कहैं यौं धरनी अहो नाथ कृतघ्न न मार मरौं ।।११९।।

छप्पै-चिन्ता सागर वन्यो जगत उद्दिम करि हीनौ । लहरि कलपना उठति कूल धीरज हरि लीनौ। फैल दैंन भय राज चोर ग्राहनि की शंका । कपटी चुगल लवार फिरत विष धर निरसंका । अति कम्पित धर्म जिहाज जहाँ लखि वृन्दावन हित नहीं थली । अब रक्षा रक्षा नगधर हरी यह प्रवल पाप आंधी चली ।।१२०।।

कवित्त-ये जू कहा हौ जहां हौ तहाँ हौ हमारी ओर नाहीं विधर्मी की घां हौ करी न यह भली है । डरे हौ या भूमि ते टरे हो किहि ख्याल में परे हो ब्रज अवनी हली है । बड़े हो ब्रजराज अति हौ देखि लाज ना गड़े हौ जग कीरीति को चली है । बिलहारी-बलिहारी वृन्दावन हित तिहारी लगाइवे बुझाइवे दुहूँ विधि छली है ।।१२१।।

भले हौ जू, भले हो, कौनसी चले हो, मलेक्ष मिलि छले हो घर बाप ही कौ खायौ है । जानें हौ जू गुण नांहि रहें छाने यशु कहाँ लौं बखांनैं अपनेनु ही बिगोयौ है । भूले हो जू हो अपनपौ खोय फूले हो कहा धौं प्रतिकूले हौ हमारी वार सोयौ है । वृन्दावन हित जगौगे पुकार जो लगौगे पर्म धर्म कौ उद्धारौ कहा धौं आपगो यौ है ।।१२२।।

पेरवनौ रच्यौ है सच्यौ है जग कर्म जल तामें अति तरफराति मीन मानी जन हैं । करूणाभिराम स्याम मारौ यमन पारधी कौं काटौ भय बन्धन निवाहौ यौ पन है। चहलत हैं दहलत हैं सींक पंक माहि नाथ कीजिये उधारतपित तन मन हैं ।।१२३।।

सूखै हैं अमोघ सिंधु छुद्र नद बाढ़े जग बोडत हैं, दहो ब्रजनाथ अब उवारिहौ कृपा रूप नौका तापै सुविधि चढ़ाय लेहु पवन यमन झोका भय संका निवारिहौ । व्रज के बड़े पालक कहावत गोपाल लाल ताकौ तौ यतन मन नीकी विधि धारिहौ । वृन्दावन हित रूप संकट काम सबकैं आये अबकै दुख धारतें हमें हूँ जू उतारिहौ ।।१२४।।

जैसें जू मथ्यो हौ छीर सिन्धु नाथ उद्दिम करि ऐसे ही मथैगे अब सेनाजू यमन की । काढि हौ घमर कौ दै यश रूप रत्नु कौ देव वल बढ़ायौ यौ राखै जू संतनु की । तव कै हलाहल जू पियौ ह्वौ सदा शिव नैं अबकैं मलेक्षानि दै करावौ पातकन की । वृन्दावन हत रूप मोहिनी अब बनिहौ नाथ भक्ति सुधा प्याय भूख हरौ साधु मन की ।।१२५।।

यमन जू बढ्यो है विंध्याचल पहार जैसो हूजिये अगस्त रूप याहि ढांकि लीजिये । सागर सम है तो चुरू ही मांहि पान करौ धर्म कौं विगेवत है क्यों विलम्ब कीजिये । भस्मासुर प्रगट्यो तौ ब्रह्माचारी बनौ नाथ याकौ करफेरि कला याही सिर दीजिये । वृन्दावन हित सुनौ हरिनाकुश आयो जो तौपे जू नृसिंह ह्वै प्रहार कौ करीजिये ।।१२६।।

धर्म कैं करारै कछु धूरि सी उड़ावत हौ पाप के करारै कछु गहरे से गहत हौ । पापी कौ बचन कलि मांहि बेगि मानि लेत संतनि के वचन कौ सुनि मौंगे से रहत हौ । छोड़े न, वनि है लाल बांह देखै

www.RadhaVallabhMandir.com

साधुनि की कहौ अब नई सी रीति क्यों कुटेव गहत हौ । वृन्दावन हित रूप रूठें से हमारी बार आगिली तौ साखि सांची ग्रन्थनि बहु कहत हो ।।१२७।।

मन ही मन लाडू खात कौन की गई है भूख मुख कौ हथ्यार वाहै कांकै भयो घाव है । बातनि बुलायौ विर्द हम हूँ सुन्यौ है कान करि तौ दिखायौ नाहिं यातें जू कुदाव है । बैरी हू सींवते हटै नवल बांह बिना तुमहू जैसे रीझत नाहि बिना हिय भाव है । वृन्दावन हित रूप ऐसे ही परेखौ हमें खेवट ह्वै डुबायौ हरि माहि धार नाव है ।।१२८।।

सवैया- राज की बुद्धि लखी तब ही जब ग्वालनि कें संग जूटनि खाई । पेट के काज त्रिलोचन के घर हीनी हूँ वृत्ति करी लरिकाई । सैन के हेत छुरा गहि कैं जू बने सब भाँति विचक्षान नाई । वृन्दावन हित बार हमारी मलेक्ष भगावत लाज है आई ।।१२९।।

विट्ठल होत न वारलगी है जू रोटी लै भागे कहा मन भाई । मंदिर फेरयो भुजाबल आपनी भेष लट्यौ धरि छानिहुँ छाई । टांडौ हूँ लांघ्यौं कबीर के संकट गौन उठावत लाज न आई । वृन्दावन हित अब बाप कौ देश लुटायौ मलेक्ष पै खोय बडाई ।।१३०।।

घर इन्द्र बसायौ बावन ह्वै प्रहलाद कौं राज नृसिंह दयौ । हयग्रीव ह्वै वेद दिये विधि कौं दियौं भूप कौं बोध जू मच्छ नयौ । बाराह मही थिरू थापी भलैं रघुनन्दन धर्म उधारि लयौ । वृन्दावन हित हम बाँटि पर्यौ ब्रजराज लला घर खोऊ भयौ ।।१३१।।

ठकुरायति आच्छी लगैं तब ही सुख पावै जो आनि बसै बल बांही । रक्षया सब भाँति करै मन दै घटती बढ़ती उर आवै जु नाहीं । अरि सौ मिलि वाको बधावै गरौ घाती विसवासी गनीमन मांही । वृन्दावन हित हरि ऐसी करी अब कौन पत्याय तुम्हारी जु छांही ।।१३२।।

कलि केहरि कौतिक देखिवै कौ कछु भानमती की सी बाजी मांडी । माया कर डोरी नचावैं गहैं बाजीगर श्री जगदीश की चांडी । विलायती वांदर आयौ मलेक्ष दई धुरकी तजी ओटती हांडी । वृन्दावन हित स्वामी की हंसी हमारौ ही मरन भई अति भांडी ।।१३३।।

हरि दूत हूँ कर्म कियो पहिलै सोई छल छिद्र भर्यौ अब हूँ । हम सों कछू अैर मलेक्ष सौं और गई न कुटेव अबै तबहू । इत बेद पुराणनि धर्म कह्यौ उत में ह्वै विगारत जू सबहूँ । वृन्दावन हित स्वामी रूचि, यौ उतकी द्वै मिलावै इत ही कबहूँ ।।१३४।।

कहा भौन की तेग कौ दाम दये कहा जैमल के रण मांहि गमायौ । देवाकी बार बुढ़ापे ग्रस्यो कब श्रीधर संग सिवाही कहायौ । द्रौपदी बार न चीर भये हरि साहुन ही नरसी ने बनायौ । वृन्दावन हित बार हमारी न औसर एक लला बनि आयौ ।।१३५।।

कब साधुनि ते घटती जू परी कब ही जु असाधुनु ते सुधरी । कब चूके हैं सज्जन प्रीति अजू कब दुर्जन खेप सनेह भरी । कबते कन्बार के वासिनु सौं मन दै घनस्याम चिन्हारी करी वृन्दावन हित व्रज वासिनु सौं कबते बिरचे नहीं जानी परी ।।१३६।।

www.RadhaVallabhMandir.com

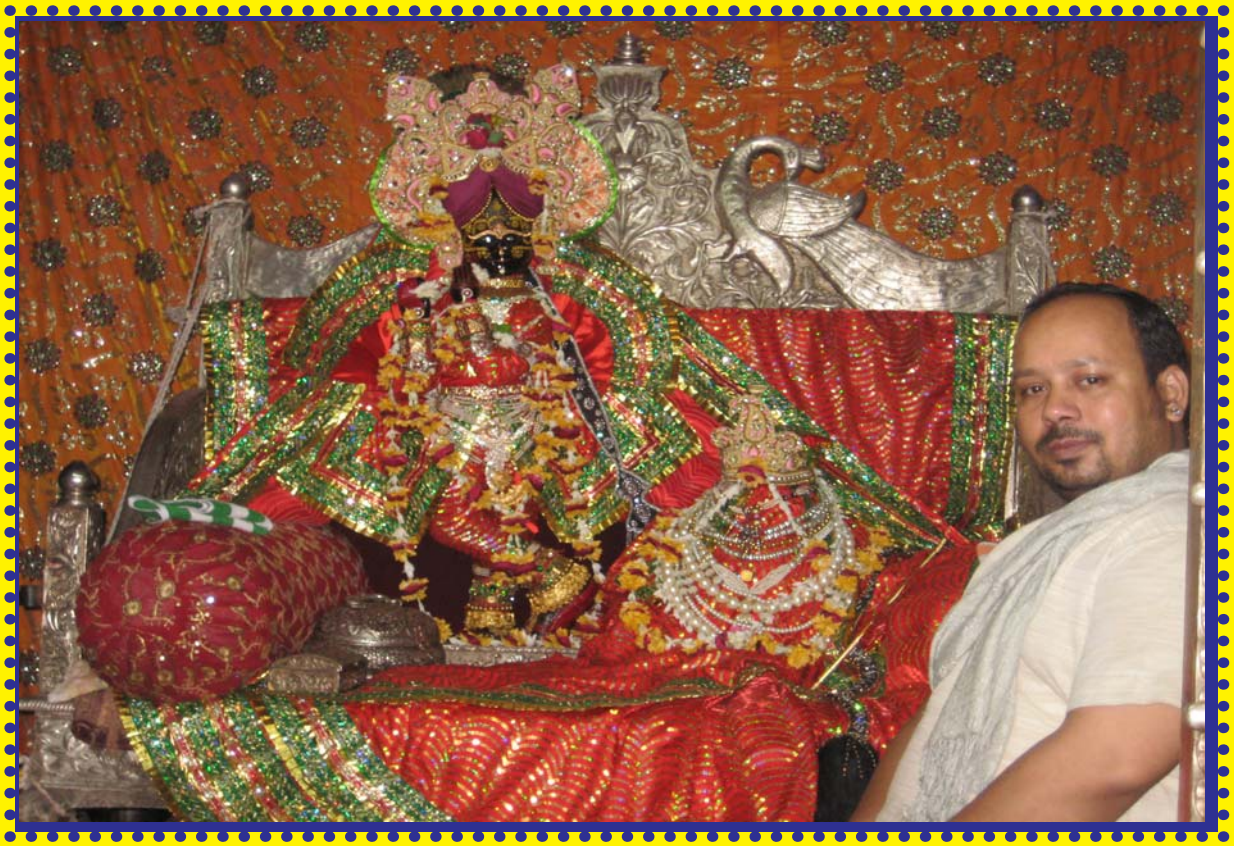

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

छप्पै-भक्त वत्सल यह विरदनाथ निर्वाहौ आछैं । जौ लागे अवदाग गहुरि पछितै हौ पाछैं । दास आस जिनि जतहु रावरे यश के गायक । हम करनी मन देत कहै कौ तुम सौं लायक । जयति ब्रज ईश सुत हरि घोषपाल मुरली धरन । भनि वृन्दावन हित रूप बलि हे राधापति असरन सरन ।।१३७।।

सदा बहैं गुण गहर रावरे यश के सागर । प्रणित मनोरथ भरन कृपा मंदिर अति नागर । हे वृन्दावननाथ रसिक राधा मन रंजन । जनहित करूणा द्रवौ होहि सब जग ज्वर भंजन । जयति जयति वृज सुख भरन हरिगोप वंष भूषन भवन । अब परम धर्म थिरू थापिये । भनि वृन्दावन हित प्रणित जन ।।१३८।।

प्रगट भागवत कह्यो बहुरि गीता हरि गायौ । ताको सार विचार कोऊ सुकृती मन भायौ । सुपन तुल्य धन धाम बहुरि ये सकल सनेही । जीवन ज्यों कण ओस विनसि है यो नर देही । यमन लाये दुहूँवार प्रभु जग हस्तामल करी यह कथा । हरिकला परम अचिरज रची दृग देखि लेहु कोविद यथा ।।१३९।।

सवैया-अति सै घन गाज न काज सरै जब लगि वर वारिन बृष्टि करै । विन भक्ति मिल्यो प्रभु जू कौ चहै बिन दान दिये यश कौ अगरै । बिनु ही बल को अरि कौं जीते बिन ही गुरू को भव सिन्धु तरै । वृन्दावन हित बिनु रच्छा कियें हरि विरद बुलावन आस धरै ।।१४०।।

सरिता पच्छिम दिस उलटि बहै रवि हूँ तपि जौं तक कौन हरै । जौ काठहूँ कौ जल बोरै अजू और पाथर हूँ जल मांहि तरै । घृत भोजन जौवे साद्र तजै पुनि सिघ जौ स्यार कौ देखि डरै । वृन्दावन हित ये तजौ हरिभक्त की रक्षा करैई करै ।।१४१।।

रितु ग्रीषम माहि तुसार परै, हिमहूँ रितु जौ ग्रीषम पजरै । सागर मर्यादहि त्यागि चलै गिरिहूँ पग आगे धरै तो धरै । सूखे सरवर मधि कमल खिलै जल कौ तजि मीन तरै तौ तरै । वृन्दावन हित एऊ नीति तजौ हरिभक्त की रछ्या ते नांहि टरै ।।१४२।।

अति सूर हूँ तौजू महारण तें मति चाल परे हूँ ते बिचरै । पच्छिम दिस भान उगै तौ उगौऔ सुमेरू कौं वौना हूँ अंक भरै । ससिहूँ सीतलता छांड़ि तपै, तरुहूँ अपने फल भक्षा करै । वृन्दावन हित सब येऊ बनै जन के पणतें नांहि टरै ।।१४३।।

बछ्रा सौ गऊ हित जो पै तजै सब औषधि वीज मही जौ गरै । अपनी गिरि भार तैजौ बिरचै अरू सेस मही सिर जोर न धरै । अवकाश अकसि न देह जू जौ नीर विनानन दैखि ढरै । वृन्दावन हित सब येऊ बनै जन के पण तें हरि नांहि टरै ।।१४४।।

धोखे जिनि भूलौ जू भूलाई ही कौं राखै बने विरचौ या मलेक्ष सौ न राखौ प्रति भीतरी । गुण के निधान ह्वै कैं डरे न नीच संग तें जू औयशु की पोट नाथ आपने लै सिर धरी । साधु संग बीच यशु रावरौ यह गाइयेगौ कहानी की प्रभुता यमन मिलै विस्तरी । वृन्दावन हित रूप यद्यपि हमारी चूक तद्यपि करौंच नाथ आपके गरें परी ।।१४५।।

www.RadhaVallabhMandir.com

वावांकेई चले हौ कछु ओर हीतें जानै जग वछरनि की पूंछ गही वांकी वेष धरयौ है । बांके बांके विरद करे है आपु पाछीवर बांके बांके पेचनि में सबको गर्व हरयो है । बांके भये हे लाल मुरली बजायवे में तब ते जु त्रिभंगी नाम जग सुनि पर्‌यो है । वृन्दावन बांकौ विरद मलेक्षा लाय तीरथ उजारि अब हमारे लिये कर्‌यो है ।।१४६।।

धर्म कौ दबाये कहौ कौन घटैगो एजू कोहै याकौ रक्षाक सो हमकौं बताइये । ये कै बड़ाई जग लज्याई भूषण है सोऊ सहज बिदा भई क्यों करि समुझाइये । आपने हित की बात आपु ही सुनी न कान एहो हांसी खेल सों कह्यो है कहा गाइये । वृन्दावन हित नागपंचमी के देव तुम ढिंग पतीजे दूध दूर हीते प्याइये ।।१४७।।

ढाल कौ तौ बाधिये जू रण में तन रच्छा करै ढाल ही जो मारै तौ बांधे कहा फल हैं । सेना को तो राखिये जू पर दल मोरिवे कौं सैना जो अपुन मारै कौन काम दल है । धन को तौ संग्रह जू धर्म ही के हेत कर्‌यो धर्म हूँ विगारि धनु राख्यौ सो तो छल है । वृन्दावन हित रूप इष्ट सेवा संकट कौं संकटन आयौ काम तौ नवेरी थल है ।।१४८।।

अरिल्ल-संकट आवै काम जानिये इष्ट सनेही । संकट जौ परिहरे नाम को ताको न लेही । त्राहि त्राहि गोविन्द न भूलि विसारिये । हरि हां वृन्दावन हित रूप विरद नहीं हारिये ।।१४९।।

कीजै कृपा सुदृष्टि आपने जानि कैं । व्रज अवनि सुख देहु अधिक हित मानि कै । तुमकौं लाज बड़ाई अति लड़ नन्द के । हरि हां वृन्दावन हित वरषन परमनन्द के ।।१५०।।

जो ताकि आये शरण ताहि क्यौं त्यागि है । समरथ ह्वै जो जतहि विरद कौ दागि है । जिहिं विधि बढ़हि प्रताप नाथ सो कीजिये । हरि हाँ वृन्दावन हित रूप स्याम सुधि लीजिये ।।१५१।।

झूंठी सांची भक्ति स्याम जन आदरो । ज्यौं युग युग चलि आई सत्य अवै करौ । लाभ हानि की बात चतुरतौ चित धरौ । हरि हाँ वृन्दावन हित दास सदा रक्षा करौ ।।१५२।।

सूख्यौ सरवर धर्म वरषि अब भरहुगे मुरझी बेली भक्ति हरित हरि करहुगे । सरस प्रेम फल फलित भक्त होंहि सुखित है । हरि हाँ वृन्दावन हित या बिनु जहां तहां दुखित है ।।१५३।।

कवित्त- **ऐहो वृज देवी जू बसावौ वृज मण्डल कौ,**
वसै जहां भक्त वृन्द हरि गुण मति योबनी ।

राधा कृष्ण अरचाओ लीला कौ अलाप जाप,
घर घर बढ़ावौ भक्ति पाप कुमति धोवनी ।

एहो वृन्दा मन सांस केत की निवासी देवी ,
मथुरा की पालक वृज पर सृदुष्टि जो बनी ।

www.RadhaVallabhMandir.com

वृन्दावन हित रूप मंगल विस्तारौ सुविधि ,
भाँति भाँति सन्तनि के द्रोही असुर खोवनी ।।१७४।।

ऐहो गोपाल जो पै गये हो विदेश कहूं,
तोपै वेगि आवौ अब वृज की पति राखि हौ ।
किधौ सुकुँवार अति आलस में दहले हौ,
तऊ यह आलस हमारे हेत नाखिहौ ।
किधौं वह क्रूर अकूर पहले ले गयो हौ,
ऐसे कोऊ लै गयो, तौ सत्य सत्य भाखिहौ ।
वृन्दावन हित रूप हमतौ हमारी भोगी,
तुम तो जाय जग में बढ़ावत कुसाखि हौ ।।१७५।।

ढीलौ सौ कहा है विरद बाने की राखै बनै,
जो पै नजीक कहूँ वृज में हरि तू है रे ।
बाप की बपौती कौं रंग हू उपाउ करैं,
समर्थ ह्वै कुचाल गही व्यापि गई भय रे ।
जानी कलिमांहि कछू निर्वज भयो है, अति,
पुरूषन कौ नाम तऊ राखि दांति दै रे ।
वृन्दावन हित रूप गिरि कर उच्यायौ ज्यो,
ऐ हो, नन्द पूत धूत अब उवारि लौ रे ।।१७६।।

वन रक्षा गोपेसुर पुरी रक्षा भूतनाथ,
गिरि की तरहटी चक्रे सुर रक्षया करौ ।
जननि की रक्षा भाँति भाँति वृज भूमि राखौ,
गऊनि की रक्षा गोपाल वेस अनुसरौ ।
द्रुम वेली रक्षा तडाक धर्म अनुजा करौ,
औरो पसु पछिनु की ग्वाल वृन्द भय हरौ ।
वृन्दावन हित रूप राधा सुख्या कंज भृंग,
आनि कै जू माथे पै हमारे सो कर धरौ ।।१७७।।

गोद लेत भूमि पै परत तौ कहा है बस, सेवाहूँ करत जौ बढ़ाई धूमधाम है । हमतौ बनाये काम क्रोध लोभ मोह ही के यमन बनायौ सो तौ गुणनि को ग्राम है । हमतो सेवा भवन न जान्यो ज्यो वेद रीति वह तौ वेद अग्य निपुन सब जाम है । वृन्दावन हित रूप चाहे पिय सुहागिनी सो मान्यो विलग जो पै कहौं कौन काम है ।।१७८।।

पावते प्रसाद परे रहत है यमुना तट हमसे कुपूतनि सौ पायौ कब मानते । लायक सपूत कौ जौ चाहत हैं सब कोऊ यह तो विदित जग अज्ञ जन हू जानते । धर्महीन कर्महीन तीर्थ तपदान हीन वृत

www.RadhaVallabhMandir.com

हूँ करिहीन और कहाँ लौ बखानते । वृन्दावन हित रूप अैसे हम जाने जब तब तोजू बुलायौ धर्म धुजा खुरासान ते ।।१७९।।

परजा को करयौ कसूत यमन और धोरी लाय त्राहि एहो नाथ चहूँ ओर मची है । आगि और फूंकनी भये हैं ये दोऊ दल इत उत तें दपट झपट भाठी मानौ तची है । वृन्दावन हित रूप हो प्रभू सीतलता कहाँ बिना चरण रावरे न ठौर कहूँ बची है । कर्म पासि गांठि गर परी है विधैता कृत तुमही आय काटौगे कहा विपरीति आय रची है ।।१६०।।

ऐसी औत करी हरिरनाक्षात व वाराह भये ऐसी अति करी वैन्य पृथु रूप अवतरे । ऐसी अतिकरी हरिनाकुश तौ वृसिंह भये, ऐसी अतिकरी क्षत्री परसुराम है करे । ऐसी अतिकरी लंकेश महागर्वि चल्यो दसरथ कुल भूषन राम काल गाल सो दरे । वृन्दावन हित रूप नन्द सुत मारे असुर अब कै सुनी न कहू कानन पै कर धरे ।।१६१।।

सवैया- सुनौ अथवा हरि कै न सुनौ हम तौ बिनती यह न्याय करी । तुम दण्ड के दाता बने सिर पै तऊ रावरी रीति जु क्यों बिगरी । जगदीश के दास अनी सहते यह काहे तें नाथ मर्याद टरी वृन्दावन हित वरन्यो यशु यौं मन क्षोभ अनीति सही न परी ।।१६२।।

गनिका के कर्मनि लेखै लयौ कब व्याध नें धर्म कौ खेत वयौ । आचार धर्म कुल जाति तजी चढ़ नाम प्रताप विमान गयौ । सधना और भील कुलीन कहा कछू रावरी रीझ सौ सिद्ध भयो वृन्दावन हित पद ज्यौं ज्यौं नवे हम कौ अति रीझ कैं दण्ड दयौ ।।१६३।।

सहसा घटि काम करै कोऊ जौ ताने यश रत्न गमाय दयो । पाछे पछिताय न ढूँढै मिलै वह औसर चूक्यो कहा धौं भयो । अब भाग सौं प्रापति होहि तवै हरि भक्ति को विरद बढ़ावौ नयौ । वृन्दावन हित अब एती करौ सुने कान मलेक्ष गयो जु गयो ।।१६४।।

अपनौ कहवायौ जो छाप छप्यौ पर हाथ विक्यौ प्रभुता जु घटी । कहूँ ठाडो लुटयो कै जिहाज फटयो मन में उपजी तब बात लुटी । जन जेजे मलेक्षानि हाथ हने विधि हू न छुवै तिनै फूल छटी । वृन्दावन हित हरितो बिन कौ सकै मूंदि हूँ जो पै अकाश फटी ।।१६५।।

कलि के परपंचनि बुद्धि छुई बिगरी तब नाथ तुम्हारी गटी । यमने सुर नीच की ओर ढरे जग जानि परे एजू हौक पटी । यह साखि सदा हित भक्तनि सौं अवरीत अनौखी कहा पलटी । वृन्दावन हित पद ओट दुके तिनहूँ कौ पछारयौ गुदी जु कटी ।।१६६।।

अरिल्ल- अब हरि वदलो बुद्धि भक्तजन तपित हैं । देखि देखि कलि धर्म हिये अति कुपित हैं । परम धर्म की अब कै खेप भराइये । हरि हाँ वृन्दावन हित जन हिय कोश धराइये ।।१६७।।

भव निधि कौ वोहिथ तुम्हारौ नाम है । तारौ भावहु बोरौ औरन ठाम है । तुम स्वामी हम सेवक बिनती उचित है । हरि हाँ वृन्दावन हित करहु जौ मन कौ रुचित है ।।१६८।।

www.RadhaVallabhMandir.com

कवित्त- चूर चूर करि देह डारी है तुम्हारे धाम, भक्तनि कौ पण तौ प्रगट दीस परयौ है । उनको तौ धर्म हौं सो उननि निवाह्यौ मलै तुम सब भाँ नाटे कानिन हाथ धरयौं है । खेत तें नटयौ नाथ जीत जग ताकी गनत सेवक कौ काम हो जो सो रतौ पूरौ परयौ है । वृन्दावन हित रूप धन्य वे अनन्य जन मचलि कै लई रज साकौ कलि करयौ है ।।१६९।।

जीतै कहै तुम सौ पुनि हारे हूँ तुमही सौ दोऊ विधि कुशल हौ वृजेश लाड गहर के । समरथ सौं सबकी पुकार ये जू युग युग कहा करै रंक आय परयौ नन्द कहर के । इतने उराहने दिये हैं तुम सुनै कामन रूचे हैं कि नांहि अैडाइल सुत महर के । वृन्दावन हित हम करनी क्यों दीनौ मनु काहे तें रचे हैं युग पाछिल पहर के ।।१७०।।

सिच्छ दई है नाथ जो चित्त मैं धरेगेा कोऊ संकित करै हैं पुर ग्राम और सहर के । कथि तौ सुनायौ पुराणनि मैं नाना भाँति विषई अधमानी नांहि भोये मद जहर के । तिनकौ तौ यन्त्र मन्त्र एक वह विचारयौ, आप अैपे विष बेलि फिर लेत लहर के । वृन्दावन हित रूप बिलग हूँ न मनौजू काहें ते रचे है युग पाछिले पहर के ।।१७१।।

भई हैं अराजिक यौं भूमि हरि कृपाल हौ हू राजा रूप ह्वै के धर्म रच्छा अब करनी है । कलि में प्रवर्त घोर धर्म चोर भूप भये पाप के पहार बढ़े भार कांपत धरनी है । जग जब धर्म की गिलानि होहि श्रीमुख कह्यौ तव तव आविर्भाव ऐसे जू वरनी है । वृन्दावन हित रूप हम सिरनि हेरौ कहा सत्य वचन करौ तो जग की भय हरनी है ।।१७२।।

भई है अराजिक यौं भूमि हरि कृपाल हौ हु राजा रूप ह्वै के धर्म रच्छा अब करनी है । कलि में प्रवर्त घोर धर्म चोर भूप भये पाप के पहार बढ़े भार कांपत धरनी है । जग जब धर्म की गिलानि होहि श्रीमुख कह्यौ तब तब आविर्भाव ऐसेजू वरनी है । वृन्दावन हित रूप हम सिरनि हेरौ कहा सत्य वचन करौ तो जग की भय हरनी है ।। १७२।।

विरद विगरि है रावरो लीजौ खबर जरूर,
ज्यो मारे हे असुर ब्रज यमन करौ यों चूर ।।१७३।।

कवित्त-हरि ही की इच्छा काल रूप धरि विहार कियौ यमनन होहि प्रेर्‌यौ नन्द ही कै लला रे । कर्मनि को भोग सब याही द्वार निकसि आयौ भक्ति की बूझी बात प्रगटयौ लै चलारे । गाय ही चराय जानी झांके कै पराये घर कहा जानै भक्तनि रीति खाये छाक खलारे । वृन्दावन हित रूप साधु पथ लगायौ दाग नीरस ही खेल्यो यह नन्द सुत कलारे ।।१७४।।

छप्पै-इष्ट भजन लवलीन महत गुण सबहि विशेखे । हित कुल उदित उदार कृपा मूरति ही देखे। विद्या गुण गम्भीर सकल ग्रंथनि मत जोये । प्रभुचर्या सृहथ नयन भावना समोये । बन रज हिय गाढ़ी लगन सौं मुकुन्दनलाल प्रापति भवन । वृन्दावन हित रूप रजतऊ तजी न भय आगम यमन ।।१७५।।

कवित्त-प्रेमदास प्रेम वन भूमि सौं निवाह्यौ आछैं पचि हारे सब ही तज्यो न कुञ्ज भवन है । टूक टूक करि देह डारी जिनि विपन में संका न मानी यमन आयौ तुच्छ कवन है । विकट वृत आचरयौ मचलि

www.RadhaVallabhMandir.com

कैं लही रज महत जन गिराकरी सत्य तौ गवन है । वृन्दावन हित रूप रहनि सम कहनि करि लये अपनाये निज राधिका रवन है ।।१७६।।

कृष्णदास छकनि सौं छकेई रहैं युगल भाव आयौ यमन हाली श्रष्टि भयहूँ न भई है । व्यास नन्दन चरणनि सौं गाढ़ी अति निष्ठा बाढ़ी यद्यपि मलेक्षानि ताप नाना भाँति दई है । रज की अभिलाषा बड़ी रहति ही निसदिन वही देह रज में सांचें पन सौं मिलई है । वृन्दावन हित अनन्य बाँके हित रीति पथ उनकी सम वेई उपमा न बनै नई है ।।१७७।।

विरह सौ तायौ तन निवाह्यौ वन सांचौ पन धन्य आनन्द धन गाई सोई करी है । एहो वृजकुंअर धन्य तुमहूँ कौ कहा नीकी अति प्रभुता यह जग में विस्तरी है । गाढ़ौ व्रज उपासी जिनि देह अन्त पूरी पारी रज की अभिलाष सो तहाँ ही देह धरी है । वृन्दावन हित रूप तुमहूँ हरि उड़ाई धूरि अैसे सांची निष्ठा जन ही की लखि परी है ।।१७८।।

पूरो वैराग त्याग देह अंत रह्यौ अचल धन्य यादों दास गही सुदृढ़ वन थली है । चाहना के बीज इष्ट प्रापति आंच जारि डझरे एक आसन बैठि के विताई वर्ष भली है । तनहूँ कौ आनि कै मलेक्षानि जब पीड़ा दई बार बार यही रज अंगनि लै मली है । वृन्दावन हित रूप धन्य ऐसे साधुजन जिनके भजन की कहानी जग चली है ।।१७९।।

मुद भर हरिवंश नाम गायवे लडायवे कौ कोहै अब दूजौ भगवान दास सो अहा । मालवा में वास जू उगसरा कहौ वै जहाँ वृन्दावन बहुरि वास हित प्रताप ते लहा । ताहू ने मलेक्षा कौ जू आगम सुनि अपने हाथ टूक टूक करि कै देह डारी कहौं कहा । वृन्दावन हित रूप समझि रज मिलायौ तन कहा न उपासी करैं अैपै कौतिक महा ।।१८०।।

सेवा करी सुहथ बिहारीजू की नीकी भाँति सुहृद ताकी मूरति पुजारी कृष्णदास है । इष्ट के चरण वित राखि देह डारी रज यातें गुणवंत विपुल सुमित प्रकास है । विपता परीयमन ने समाय वनवासी आय तजी नहिं वन सीवां मन रज आस है । वृन्दावन हित रूप समझे की बड़ाई यही अन्त वत छाँड्यौ तन राधा भुवन पास है ।।१८१।।

छप्पै-गुरू सेवा मति भूरि महाजन परम धर्म रति । विनय भाव अति निपुन रही हरि भजन भरी मति । सुनि यमन भय कान समझि सब तजि वन आयौ । देखौ भवित प्रताप धाम वृन्दावन पायौ। निहंक जन परम प्रिय सम्पत्ति सब खरची हेत हरि । पुनि पुनि लछमनसिंह की वृन्दावन हित परम करि।।१८२।।

कवित्त- गूदरी न कवर दिगंवर अवधूत वेस पर हथ भोजन करैं ऐसी जाकी रहनी है । मूक गहै तरु तरु तरैं फिरै जड़ बावरो सो ऐसो वैराग देखो कहा और कहनी है । प्रगट निर्गुणवाद सौं दिखावै जू हियें और युगलदास भीज्यो नेह लीला रूप चहनी है । वृन्दावन हित रूप हो हरि ऐसे हूँ संत कीनै मलेक्षा नै करौ सौ सिर सहनी है ।।१८३।।

ठारह सै तेरहौं अठारह सै सत्रह वर्ष दुहुँवार आय यमन जननि ताप दयो है । हरिही द्वै कला खेलि

www.RadhaVallabhMandir.com

सवनि कौ हर्‌यौ गर्व दास को तौ पहले आय श्रीमुख निर्मयो है । चेतौ रे चेतौ उपदेस प्रभु कर्‌यौ है यह देह सनबंध सब ही सुपन सम भयो है । वृन्दावन हित रूप वसु न चल्यों काहू को देखौं महा अविरजमय खेलसौं ह्वै गयो है ।।१८४।।

छप्पै-जयति जयति ब्रज चंद नन्द नन्दन अति नागर । जन हित रच्छा करौ विरद लज्या गुण आगर । यह तुम बांधी पैज सद व्रज जन सुख भरि हौ । धरि हौ रूप अनेक हौं न व्रज धर ते टरि हौं। वचन आपनै सुधि करहु इहि विधि यह विनती करी । भनि वृन्दावन हित रूप वलि अब थपौं भक्ति अचल हरी ।।१८५।।

अरिल्ल-ठारह सै सत्रहौ वर्ष गत जानिये । आसाढ़ वदी हरि वासर बेलि बखानिये । जड़ हूँ कौ ये वचन कृपा उपजाय है । हरि हाँ वृन्दावन हित रूप स्याम भाय हैं ।।१८६।।

सोरठा-कुयशु धनी को होय, सेवक की घटती परै ।
यामै संस न कोय, बात विदित यह जगत मैं ।।१८७।।

मन दै सुन तन कान, एते दये उराहनै ।
कहियत कृपा निधान, एपै वर्षत बूंद नहिं ।।१८८।।

बाजी रोपी स्याम, कौतिक देख्यौ बहुत अब ।
सृष्टि भई संग्राम, पर्म धर्म थिरू थापिये ।।१८९।।

हमते कौन अयान स्वामी सौ एती कहै ।
हिये भई अति अकुलानि, समर्थ सौं बिनती करी ।।१९०।।

लिखौ भरतपुर ग्राम, जहाँ नृप विदित सुजान सिन्ध,
वेलि हरिकला नाम, वृन्दावन हित स्याम प्रिय ।

छप्पै-जयति जयति वृज भूमि जयति रक्षाक मुरलीधर । कर कमलनि कौ छाळ सदा राखौ अपने पर । जय विपने स्वरि सखी वृन्द नायक श्री राधा । प्रणितनि की भय हरौ मेटि सब विधि की बाधा। नित जयति घोष पालक मही भनि वृन्दावन हित रूप हरि । धन्य गोप ओप दुहुँकुल उदित अब रक्षा-रक्षा जन सुविधि करि ।

N

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन